KUBER – THE LORD OF WEALTH
The Ever Present Santa of Kashmiries

The Yakshas are the people who are equivalent to the gods. The Chief of Yaksha is known as Kubera. Kuber is the god of wealth in our vedic literature. In India we have a misperception that Laxmi is the goddess of wealth, but Laxmi is goddess of fortune, which usually and simplistically translates as wealth. But as per the Ancient Scriptures and written history God of wealth is Kuber. On every Amavasya (No Moon) of Pousha. He visits us and we offer him mixed food (Kichdi) Rice with mixed Dal and in return he gives us the wealth and gifts. In fact much before the advent of Chiristianty we have our own SANTA CLAUS in the form of Kuber. He too visits us during the chili winter nights and offers us gifts. Kuber is the SANTA of Kashmiri Pandits or the people who are vedic by traditions.

In our homes the pestle (काजवांठ) represents the Kubera, because it is written that Kuber is short in size with massive belly. This is a symbolic manner of saying that he is a dual concept god, possessing both male and female energies.

During the ritual of Marriage among Kashmiri Pandits the bride and groom are made to take a vow in presence of Kuber (in form of) to remain faithful to each other. The bride takes the Lord Kuber pestle (काजवांठ) to her in laws as mark of treasure.

That is why we the KPs are not used to lend or take the pestle (काजवांठ) out of their houses.

Kubera is ussally described as being red in complexion or pinkish the traditional colour of all Yaksha. It is so believed that Yaksha Raj makes a typical sound 2½ times like a wild animal and if one is able to take away his cap and then keep that under a hand mill wealth is bestowed upon him.

Kubera is the guardian of the North Quadrant of the earth. The Sapta Matrikas the Seven Great Mother Goddesses are always represented as protected by Kubera on one side and Lord Ganapati on the other

Manuj Baahya Vimaanparisthitim Garud Ratna Nibham Nidhi Naayakam

Shiva Saktiaa Mukutaadi Vibooshitam Var

Gade Dahatam Bhaj Tundipam

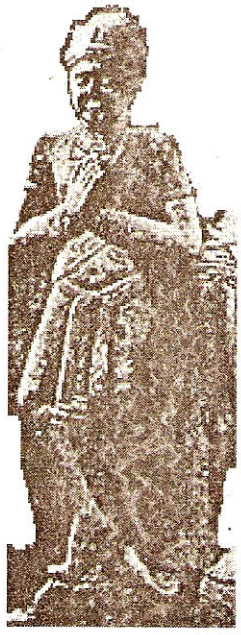

On Yaksha Amawasya Day (some time the day does not fall on Amawasya) we worship the Kubera in form of pestle. We bathe him, we offer him seat Doop, Deep, and then food. His cherished food is Dal Mixed with Rice (Kichdi). We keep a plate full of Kichdi along with some flowers on a seat of Grass / Flower (आरि) outside our living places, so that the lord of wealth has disturbance. It is said that along with Kuber come many creatures of lower order, so people usually avoid disturbing the place of eating.

It is from here in Kashmir that the Kuber Puja has entered into Buddhism and Jainism and both of the spiritual paths claim it their own. Truly both the schools are having the genuine blesses of Kuber – the God of Wealth.

- Gargey

गाशिर अछॅर

शालस लोट जियूठ, पानस वरूण त वलुण

SHAALAS LOT ZYOOTH, PAANAS VURUN TU VALUN.

The Jackal has (quite) a long tail (yes), to serve him his woaper.

Sense:- The Wealth of a rich man is a relief to none. It serves only his personal ends and not the poor mans needs

यक्षामावस्या

The Day of Kuber

The Lord of wealth - kuber

सर्वप्रथम एक कवली अथवा थाली में आरी पर "काजवोट" (बहेश्वर) रखें और धूप-दीया पूजा के बाद उसकी पूजा आरम्भ करें, हमारे घरों में कुबेर जी (धन के देवता) काजवोट के रूप में निवास करते हैं इसी कारण विवाह के अवसर पर पति-पत्नी काजवोट पर रखकर धन के स्वामी बन जाते हैं। ध्यान रहे यही 'काजवोट' लड़की अपने ससुराल ले जाती है ताकि उसके ससुराल में धन-धान्य की वृद्धि हो। इसी ''काजवोठ'' को ''बहेश्वर'' कहते हैं।

इसी कारण काजवोट को घर के रसोईघर में ही रखना चाहिये।

हाथ में थोड़ा पानी ले के पढ़ें

अस्य श्री आसन शोधन मंत्रस्य मेरुपृष्ट ऋषिः।
सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसन शोधने विनियोगः।।

पृथ्वी को नमस्कार करें

पृथ्वि त्वया धृता लोकाः देवित्वं विष्णुना घृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु च आसनम्।।

दर्भ की दो तीलियां/पुष्प धरती पर रखें

ध्रुवा, ध्यौ, ध्रुर्वा पृथिवी ध्रुवास पर्वता इमे।
ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विश्वामसि।।

पृथ्वी को तिलक, अर्घ, पुष्प लगायें

प्रीं पृथिव्यै आधार शक्त्यै समालभनं गन्धो नमः।।अर्थो नमः पुष्पं नमः

गणपति जी का ध्यान करें

उों शुक्लाम्बर घरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्याये सर्वविघ्नो पशान्तये।।
अभिप्रीतार्थ सिध्यर्थं पूजितो यः सुरैरपि।
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै श्री गणधिपतये नमः।।

कुबेर गदयायुतं नरासन समारूढं उतरेस्यां
कृष्ण दिशि वर्णो यजेत् महातेजा कृष्णस्रग्धाम भूपितः
गुरुः ब्रह्मा गुरु र्विष्णुः गुरु साक्षात् महेश्वरः।
गुरुरेव जगत् सर्वं तस्मै श्री गुरवे नमः।।
उों श्री गुरवे नमः, श्री परम गुरवेनमः।
श्री परमेष्ठिनि गुरवे नमः श्री परमाचार्याय नमः।।
आदिसिद्धिभ्यो नमः

अपने पैरों व मुँह पर जल की बूँदें छिड़कें

तीर्थ स्नेयं, तीर्थमेव, समानानां भवति मानः, शस्यो।
उरुरूषोः धुर्तिः प्राणङ् मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पतेः।।

अनामिका (Sun Finger) में पवित्रक पहनें (या फूल हाथ में रखें)

वसो पवित्रमसि शतधारं वसूनां पवित्रमसि सहस्त्रधारं।
अयक्ष्माव प्रजया संसृजामि, रायस्पोषेण बहुला भवन्तीं।।

अपने आप को तिलक, अर्घ-फूल चढ़ावें

परमात्मने पुरुषोत्तमाय, पंचभूतात्मकाय, विश्वात्मने मंत्रनाथाय,
आत्मने नारायणाय, आधार शक्तयै समालभनं
गन्धो (तिलक) नमः, अर्घो नमः, पुष्पं नमः।।

परिवार के सब सदस्यों का तिलक करें

रत्नदीप को तिलक व फूल चढ़ावें

स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतः तिमिरापहः।
प्रसीद मम गोविन्द दीपोऽयं परिकल्पितः।।

धूप को तिलक व पुष्प लगावें

वनस्पति रसोदिव्यो, गन्धाढयो गन्धवत्तमः।
आधारः सर्वदेवानां धूपोऽयं परिकल्पितः।।

सूर्य भगवान का ध्यान करें (निर्माल्य पात्र में तिलक व अर्ध-फूल डालें)

नमो-नमो धर्म निधानाय, नमः सुकृतसाक्षिणे।
नमः प्रत्यक्षदेवाय, श्री भास्कराय नमो नमः।।

निर्माल्य पात्र (थाली) में जल की धारा डलते हुए पढ़ें

यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुः भ्रातापि नो यत्र सुहृज्जनशच
न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिः, तत्रात्मदीपं शरणं प्रपद्ये।।
आत्मने नारायणाय आधार शक्तयै कुबेराय। त्र्युम्बुकसखाय।
यक्षराजाय। गृहयकेशुराय। मनुसघर्माय। धनदाय। राजराजाय।
धनाध्पिाय। किनरेशाय। वैश्रवणायं। पौलस्त्याय। नरवाहनाय।
यक्षाय। एकपिंगाय। रोड बिडायं। श्रीदाय पुण्य ज़नेशराय। यक्षाधि
पतये कुबेराय नड़कुबर पितो कुबेराय। दीप-धूप संकल्पात
सिद्धिर अस्तु धूपो नमः, दीपो नमः
थाली में काजवोठ रखें

अब जीवादान (Infusing the life) देने के लिए एक खोसू (Our traditional Cup) अथवा कवली में पानी रखकर तीन पुष्प तीन मंत्र पढ़ते हुए डालें :-

1. सँ वः सृजामि हृदयँ, संसृष्टं मनो अस्तु वः।
- **एक फूल डालें**
2. सँ सृष्टाः तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणोः अस्तु वः।
- **दूसरा फूल डालें**
3. संयावः प्रियास्तन्वः, संप्रिया हृदयानि वः;
- **तीसरा फूल डालें**

आत्मा वो अस्तु संप्रियः संप्रियः तन्वो मम।

अब एक विष्ठुर अथवा कवली से मंत्र युक्त जल अपने सामने रखी थाली में बैठे कुबेर जी अर्थात् काजवोट पर छोड़कर पढ़ें।

अश्विनोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तांतेन जीव, मित्रा वरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणन्दतान्तेन जीव, बृहस्पतेः प्राणः

स ते प्राणंददातु तेन जीव।

अब हाथों में फूल लेकर कुबेर जी (यक्षराज) का आवाहन करें

ओं भूः भुवः स्वः तत् सवितुः वरेणयं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् **(तीन बार)**

नरासनाय विद्महैं नरवाहनाय धीमहि तन्नो यक्षः प्रचोदयात् - **(तीन बार)**

ओं तत सत् ब्रह्म अद्य तावत् **पोषमासस्य कृष्णपक्षस्य** तिथौ

Name of the day

कुबेरस्य, यक्षराजस्य, राजराजस्य, महारजस्य पूजनं

अर्चां अहं करिष्येः

ओं कुरुष्वः **(हाथों में रखे फूल को निर्माल्य में डालें)**

अब आसन दें

कुबेरस्य, यक्षराजस्य, राजराजस्य, महारजस्य पूजनं, इदं आसनं नमः।

पूजा करने की आज्ञा माँगें

कुबेरस्य, यक्षराजस्य, राजराजस्य, महारजस्य, पूजनं युष्मानं पूजामि ॐ पूजयैः

अब "काजवोट" के रूप में बैठे कुबेर जी का आवाहन करें (हाथों में फूल लें)

पूजनं निमितं आवाहयामि ॐ आवाहयै।

कुबेर गदयायुतं नरासन समारूढं दिशि यजेत् कृष्ण वर्णो महातेजा कृष्ण स्रग्घाम भूषितः

बलि पुष्पं चरूश्चैवव धूपोऽयं प्रति गृह्यतां।।

अब पाध्य दै (Padya Means offering water at feet) ध्यान रहे इस घड़े/खोसू का सारा पानी खत्म करना चाहिए।

कुबेराय, धनदाय, यक्षाधिपते पाद्यं परिकल्पयामि नमः

शन्नो देवीर भिष्टाय आपो भवन्तो पीतये,

शँयारिभिस्रवन्तु नः।

अब अर्घ्य दें (offer water at Head)

कुबेराय, धनदाय,यक्षाधिपते अर्घ्यं नमः

अब इस घड़े/खोसू में नया जल लेकर उसमें दूध, दही, घी आदि डालकर और काजवोट पर डालें और पढें।

कुबेर, धनदाय, राजराजेश्वर, महाराज, यक्षेश्वर इदं वः

कुबेरस्य, यक्षराजस्य, राजराजस्य, महारजस्य पूजनं आचमनीयं नमः मन्त्र स्नानं नमः

कुबेर जी (काजवोठ) को स्नान करावें

पानी में दूध, टीका, फूल डाल कर निर्माल्य की थाली में आरि पर रखे हुए कुबेर जी (काजवोठ) पर धीरे-धीरे डालते जाएँ व पढ़ें

सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तमाशुं सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति। साधन्यं वितथ्यं सभेयं पितृश्रवणं ददाश तस्मै।।

राजाधिराजाय प्रसह्य साधने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान्काम कामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय वै नमो नमः।।

आसन (फूल) पर अलग से बिठाये

आसनायँ नमः, सिंहासनाय नमः, नरासनाय नमः

यक्षेश्वर, धनाध्यक्ष देवासुर नमस्कृत। धनं धान्यं तथा मानं देहि मे नरवाहन। दारिद्रय दुःखहर्ता त्वं सर्वसंपत प्रदायक

गन्धो नमः, अर्घो नमः, पुष्पं नमः

धूप व दीप चढ़ावें

कुबेरस्य, यक्षराजस्य, राजराजस्य, महारजस्य पूजनं धूपं दीपं चामरं, छत्रं, आदर्शं परिकल्पयामि नमः

हाथों में फूल लेकर विनम्रता से पढ़ें
अर्ध्यदानार्ध्वन विधिः सर्वाः परिपूर्णमस्तु''
हाथ पर जल की धारा डालते जाय
शन्नो देवीरभीष्टये शन्नो भवन्तु पीतये, शं योरभिस्रवन्तु नः कुबेराय, धनदाय, अपोशानं नमः आचमीनयं नमः

फिर से हाथों पर जल की धार डालते हुए पढ़ें
शन्नो देवीरभीष्टये, शन्नो भवन्तु पीतये शं योरभिस्रवन्तु नः यक्षेशवराय, धनदाय, राजराजेशवराय दक्षिणाये तिल हिरण्यं रजत निष्करणं ददानि **(दक्षिणा काजवोठ के समान रखे)**

अब चटू वाली थाली, कुबेर जी की थाली तथा परिवार के निए नेवेद्य छोटी-छोटी थालियों में लाये तथा पढ़ें

चटू की थाली (or in a plate) को हाथ से छूकर पढ़ें

नैवेद्य की थाली को छूकर मन्त्र पढ़ें (प्रेण्युन वाली थाली)
अमृतेष्मुद्रया अमृतीकृत्य। अमृतमस्तु अमृतायतां नैवेद्यं सावित्राणि वत्रिस्य देवस्य सात्वासवितुः प्रसवे अश्विनोर्बाहुभ्यां पूश्णो हस्ताभ्यामादधे। महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वार्देवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलष देवताभ्यः ब्रह्म विश्णु महेश्वर देवताभ्यः चातुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतुपतये नारायणाय पोषे प्रियासहिताय अनन्ताय वागीश्वरी सहिताय अग्निश्वात्तदिभ्यः पितृगणदेवताभ्यः भगवते वासुदेवाय, सीता सहिताय श्री रामचन्द्राय, राधा सहिताय श्री कृष्णाय, दशावतारेभ्यः, सहस्त्रनाम्ने, विष्णवे, लक्ष्मी सहिताय नारायणाय। भवाय देवाय, शर्वाय देवाय, रुद्राय देवाय, पशुपतये देवाय, उग्राय देवाय, भीमाय देवाय, महादेवाय, ईशानाय देवाय, ईश्वराय देवाय, उमासहिताय शिवाय, ॐ जुंस्सः शिवाय महामृंत्युंत्रय भट्टारकाय, महाबलेष्वराय, पार्वतीसहिताय परमेश्वराय, विनायकाय, एकदन्ताय, कृष्णपिङ्गलाय, गजाननाय, लम्बोदराय, भालचन्द्राय, हेरम्बाय, विघ्नेशाय, विघ्नभक्ष्याय, वल्लभ सहिताय, श्रीमहागणेशाय। क्लीं कां कुमाराय, शण्मुखाय-मयूर वाहनाय, पार्वतीनन्दनाय, अग्निभुवे, स्कन्धाय, शड़ाननाय, गंगापुत्राय, षरजन्मने, शाण्मातुराय, सेनाधिपतये कुमाराय। ह्रां ह्रीं सः सूर्याय, सप्ताश्वाय, अनश्वाय, एकाश्वाय, नीलाश्वाय, प्रत्यक्षदेवाय, परमार्थसाराय, प्रभाहिताय, आदित्याय,। भगवत्यै अमायै, कमायै चार्वङ्गयै, टङ्कधारिण्यै, तारायै पार्वत्यै, यक्षिर्ण्य, श्रीषारिका भगवत्यै, श्री शारदा भगवत्यै, श्रीमहाराज्ञी भगवत्यै, श्री ज्वाला भगवत्यै, व्रीडा भगवत्यै, वैखरी भगवत्यै, वितस्ता भगवत्यै, गङ्गा भगवत्यै, यमुना भगवत्यै, कालिका भगवत्यै, सिद्धलक्ष्म, महालक्ष्मै, महात्रिपुर सुन्दर्यै, सहस्त्र नाम्नै देव्यै भवान्यै। अभ्यङ्करी देव्यै क्षेमङ्करी भवान्यैः, सर्वशत्रु घातिन्यै इह राष्ट्राधिपतये रुद्रराज (केवल जम्मू में) (अपने-अपने क्षेत्रों के भैरव का नाम) भैरवाय। इंद्रादिभ्याः दशलोकपालेभ्यः, आदित्यादेवेभ्य, एकादश्य गृहयाः, महागायत्रे, सावित्रे, सरस्वतयै, हेरकादिभ्यो वटुकादिभ्यः ॐ तत्सद ब्रह्म अधतावत् । पोषमासस्य, कृष्णपक्षस्य तिथौ (Name of the lunar day)। यक्षराज, कुबेर, पूजा निमित्त ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः।।

ख्यचर को टीका, फूल, फूल आदि लगा कर पढ़ें

समालभनं गन्धो नमः अर्धो नमः पुष्पं नमः।।

छत पर अन्य जीवों के लिए एक मयची (First full of the Kichdi) पर पढ़ें

या कावित् योगिनी, रौद्रा, सौम्या धौरतरा परा, खेचरी, भूचरी, रामा तुष्टा भवन्तु मे सदा आकाशमातृभ्यः अन्नं नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः

इस पर तिलक व अर्घ फूल लगायें
यक्षराज की थाली (or small plate) को छूकर पढ़ें

यक्षराज! महाभाग! सर्वभूत दयाकर! श्वसेनया समदेव! गृहाणमत्कृतं चरुम।। यक्षाय यक्षसेनाधिपतये कुबेराय पच्कान्नं समर्पयामि नमः

माषा मूलकव्यंजनादिरसिकः श्रेमान् अपूपान्नभुक हेमन्ते च समागतः, प्रतिदिनं यः सारमेयंवृतः।।

देव्याः गोमय रूप आश्रित तनुः यक्षेश्वरः श्रेयसेलाभह आयुः धन धान्यदोऽस्तु सततं श्रीराजराजेश्वरः

रसोईघर में दो मडर्च्छया (Fist ful of Kichdi) रखने से पहले उन्हें थोड़ा पानी छिड़कें/पड़े।

योऽस्मिन्न वसति क्षेत्र क्षेत्रपालः संकिंकरः तस्मै निवेदयाभ्यद्य बलिं पानीय संयुत्तम्।।

क्षां क्षेत्राधि पतये अन्नं नमः।
रां राष्ट्राधि पतये अन्नं नमः।
सर्वाभय वरप्रद मयिपुष्टि पुष्टपति दधातु।

ध्यान रहे इस पूजा का विसर्जन (अछिद्र) नहीं होता है कुबेर जी काजवोट की शक्ल में हमारे घर में रहते हैं।

आपन्नोऽस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु र्सवदा
भगदसावां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणगतक

Courtesy :
Jyotishachyara & Karam Kand Shiromani
Sh. Kashi Nath Handoo
(Shiv Nagar)